दिनांक :- 25-04-2020

कालेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डा० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)
स्नातक :- द्वितीय वर्ष कला

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

पत्र :- चतुर्थ
इकाई :- तीन
अध्याय :- तैपिंग विद्रोह

(2) परवर्ती मंचू शासकों की दुर्बलता - तैपिंग विद्रोह का एक मौलिक कारण परवर्ती मंचू शासकों की दुर्बलता है। चीनियों ने मंचुओं को बराबर विदेशी ही समझा तथा उसके प्रति दिल से भक्ति-भावना प्रदर्शित नहीं की। 19 वीं शताब्दी के प्रारंभ में उनके कुशासन के विरुद्ध चीनियों में और भी असंतोष बढ़ गया। चीन के सम्राट को अयोग्य प्राप्त थे। योग्य और शक्तिशाली सम्राटों के अधीन चीन की उन्नति हुई किंतु निर्बल सम्राटों के अधीन चीन भी कमजोर पड़ गया। प्रारंभिक

मंचू सम्राट शक्तिशाली और योग्य शासक थे। किंतु उत्तर कालीन मंचू सम्राट कमजोर थे। चीन के सारे क्लेशों के मूल में उनकी निःशक्तता थी। ताओ कुआंग ने 1820 से 1850 तक शासन किया। वह अत्यंत ही निःशक्त सम्राट था। उसके ही शासन काल में चीन को प्रथम अफीम युद्ध में पराजित होना पड़ा। तैपिंग विद्रोह के समय सिएन फेंग (Sien Feng 1850-186 चीन का सम्राट था। वह न केवल निःशक्त अपितु आरामी शासक भी था। सार्वजनिक कार्यों के प्रति वह काफी उदासीन था। उसकी कमजोरी के कारण ही विद्रोह ने भयंकर रूप धारणकर लिया।

(3) देश में जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही थी। इसके अनुपात में खाद्यान्नों की उपज नहीं हो रही थी। समाज के निम्नवर्ग के लोग काफी परेशान थे। मध्य वर्ग के लोग भी काफी असंतुष्ट थे। सरकार देश को आर्थिक विनाश से बचाने में असमर्थ थी। देश का व्यापार असंतुलित हो गया था। बहुत

Scanned with CamScanner

बड़ी मात्रा में चाँदी विदेशों को जा रही थी। यह सब अफीम व्यापार का प्रतिफल था। अतः मध्यवर्ग भी समाज के असंतुष्ट लोगों का साथ देने के लिए तैयार था। तेपिंग विद्रोह की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि तैयार हो गई।

(5) प्रथम अफीम युद्ध के बाद की घटनाएँ - प्रथम अफीम युद्ध के बाद की अनेक घटनाओं ने तेपिंग-विद्रोह को प्रभावित किया। प्रथम अफीम युद्ध के समय कैंटन के अधिकारियों ने विदेशी आक्रमणकारियों के प्रतिरोध के लिए देशभक्तों का एक स्वयं सेवक दल (Patriotic Volunteers) खड़ा किया था। युद्ध-समाप्ति के बाद यह दल विघटित कर दिया गया। किंतु दल के सदस्यों के हथियार वापस नहीं लिए गए। दल के सदस्य बेकार हो गए थे कोई काम-काज नहीं मिलने के कारण वो या तो चोर-डाकू बन गए या तेपिंग विद्रोहियों के साथ मिल गए। द्वितीय आंग्ल-चीन साम्राज्य

सेना (Imperial Army) के प्रति भक्ति-भावना रखते थे, किंतु प्रथम अफीम युद्ध में यह सेना पराजित हुई थी। इससे मंचू राजवंश की सेना की अजेयता-भावना लुप्त प्राय हो गई। लोगों में सम्राट और उसकी सेना के प्रति भक्ति-भावना कम हो गई। तृतीय. अफीम व्यापार के निषेध के बाद इसकी ओर बाजारी शुरू हो गई। चीनी प्रशासन इसे रोकने में असफल रहा चतुर्थ. दक्षिण चीन में मंचू शासक काफी अप्रिय थे। कुछ शताब्दी पूर्व क्वांग तुंग और क्वांगशी प्रान्तों में उत्तर की ओर से हक्का नामक एक जनसमुदाय आकर बस गया था। स्थानीय लोगों से वे बराबर झगड़ते रहते थे। आर्थिक कठिनाइयों के बढ़ने से आपसी संघर्ष भी तीव्र हो गया था।

(5) दक्षिण चीन में बाढ़ और दुर्भिक्ष - 1846-47 में क्वांगसी एवं हुनान में बाढ़ और दुर्भिक्ष का दौरा-सा बना रहा। अनेक लोग इन प्राकृतिक प्रकोपों के शिकार हुए। मंचू प्रशासन ने

Scanned with CamScanner

अकाल - पीड़ितों की सहायता के लिए कुछ नहीं किया।
इससे लोगों में काफी असंतोष छा गया। चारों और गरीबी,
भुखमरी, महामारी, उत्पीड़न, भ्रष्टाचार आदि का वातावरण
व्याप्त था। इन भौतिक कठिनाइयों ने तेपिंग विद्रोह को प्रभावित
किया।
(6) गुप्त समितियाँ :- निःशक्त केन्द्रीय सत्ता के फलस्वरूप
देश में अनेक गुप्त समितियों का निर्माण हो गया। इनमें पाई-
ल्यान चिआओ, हुंग मैन, सान हो हुई तथा थियन -ती हुई
आदि प्रमुख थीं। पाई-ल्यान चिआओ ने बुद्ध के आगमन और
मंचू वंश के पतन का प्रचार किया। 1813 में हुनान, शांतुंग
और चयली प्रांतों में इसकी कई शाखाएं (थियान - ली-चिआओ)
पा-कुआ-चिआओ) कायम हो गई। ये गुप्त समितियाँ
काफी क्रांतिकारी थीं। जो विद्रोह -भावना भड़काने लगी।
इनके लिए चीन की पवित्र भूमि पर विदेशियों की उप
स्थिति अपमानजनक थी। इन गुप्त समितियों ने

छोटी-छोटी सशस्त्र सैनिकों की टुकड़ियों का संगठन कर लिया जो प्रशासन के लिए स्थायी समस्या बन गई तथा विद्रोह के लिए उपयुक्त साधन सिद्ध हुई।

(3) देशव्यापी अराजकता - 1840-1851 केन्द्रीय सत्ता के मूलोच्छेदन के लिए अनेक विद्रोह किए गए। 1843 में हुनान प्रांत के लोगों ने चावल का निर्यात रोकने के लिए सशस्त्र विद्रोह किया। इन्होंने स्थानीय पदाधिकारियों को बंदी बनाकर समस्त प्रशासन पर अधिकार कर लिया। मंचू सरकार को इस विद्रोह-दमन में एक वर्ष लग गया। क्वांगतुंग और हुनान प्रान्तों में बड़ी अराजकता मची हुई थी।

(4) तैपिंग विद्रोह का नायक - तैपिंग विद्रोह का नायक हुंग-सिऊ-चुआन था। वह हक्का जन समुदाय के क्वांगतुंग प्रान्त का निवासी था। 1814 में उसका जन्म एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था। बचपन से ही वह प्रशासन में उच्च पद प्राप्त

करने की इच्छा थी। स्थानीय परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के बाद

वह शिक्षक के पद पर बहाल हुआ। प्रशासनिक पद के

लिए उसने तीन बार परीक्षाएँ दीं, किंतु वह असफल रहा।

1837 में वह बीमार पड़ा और उसी समय उसे कुछ सपने

आए जिन्हें उसने दिव्यदर्शन समझा। इसी समय कैंटन में

उसकी एक चीनी धर्म प्रचारक से भेंट हुई जिसने उसे युग

के उद्बोधन के लिए शब्द नामक एक पुस्तिका दी। इससे

वह काफी प्रभावित हुआ। उसे एक नये धर्म प्रवर्तन की प्रेरणा

मिली। इसी समय इसका सम्पर्क अमरीकी धर्म-प्रभावित

हुआ। प्रचारक इसाचर रोबर्ट्स से हुआ। उसने अपने

धर्म में ईसाई धर्म के सिद्धांतों को प्रमुखता दी। वह

मूर्ति-पूजा का विरोधी बन गया। उसके धर्म के अनेक अनुयायी

हो गए। उसने शांग-ती-हुई था ईश्वर पूजन समिति

(Association for worshipping Gods) की स्थापना की।